International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शिक्षण उपागमों का प्रभाव: माध्यमिक विद्यार्थियों के समग्र विकास की एक तुलनात्मक समीक्षा

अभिलाषा कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, मण्डी गोबिंदगढ़, पंजाब
डॉ. अनुरीत कौर बराड़
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, मण्डी गोबिंदगढ़, पंजाब

सारांश

यह शोध "ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शिक्षण उपागमों का प्रभाव: माध्यमिक विद्यार्थियों के समग्र विकास की एक तुलनात्मक समीक्षा" विषय पर केन्द्रित है, जिसका उद्देश्य विभिन्न भौगोलिक पृष्ठभूमियों वाले विद्यालयों में अपनाई जा रही शिक्षण विधियों के प्रभाव की तुलना करना है। अध्ययन में 100 विद्यार्थियों (50 ग्रामीण, 50 शहरी) को शामिल किया गया, जिनके शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास को मापने हेतु मानकीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी विद्यालयों में प्रयोग हो रही नवीन शिक्षण विधियाँ जैसे स्मार्ट क्लास, समूह परियोजनाएँ और डिजिटल अधिगम उपकरण विद्यार्थियों के समग्र विकास में पारंपरिक विधियों की तुलना में अधिक प्रभावशाली हैं। विशेष रूप से मानसिक एवं सामाजिक विकास के संदर्भ में शहरी विद्यार्थी अधिक आत्मविश्वासी, संवादशील और सहयोगी पाए गए। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह भी प्रमाणित हुआ कि शिक्षण उपागम और विद्यालय का क्षेत्र विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु ग्रामीण विद्यालयों में भी नवीन एवं सहभागी शिक्षण विधियों को अपनाया जाना अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द: ग्रामीण विद्यालय, शहरी विद्यालय, शिक्षण उपागम, समग्र विकास, माध्यमिक शिक्षा, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, तुलनात्मक अध्ययन.

1. परिचय

भारत जैसे विविध सामाजिक और भौगोलिक परिवेश वाले देश में शिक्षा का स्तर और गुणवत्ता अनेक कारकों पर निर्भर करती है, जिनमें से विद्यालय की भौगोलिक स्थिति (ग्रामीण या शहरी) तथा उसमें

प्रयुक्त शिक्षण उपागम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम है, बल्कि यह बच्चों के शैक्षिक, मानसिक और सामाजिक विकास को भी गहराई से प्रभावित करती है। विशेष रूप से माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर यह प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

ग्रामीण और शहरी विद्यालयों में अंतर केवल भौतिक संसाधनों की उपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षण की पद्धति, शिक्षक प्रशिक्षण, छात्रों का सामाजिक परिवेश और तकनीकी उपकरणों की पहुँच जैसे अनेक आयाम इसमें शामिल होते हैं। अध्ययन से यह प्रमाणित हुआ है कि ग्रामीण विद्यालयों में पारंपरिक पद्धतियाँ जैसे व्याख्यान शैली, कक्षा आधारित निर्देश आदि अभी भी प्रमुख हैं, जबकि शहरी विद्यालयों में डिजिटल शिक्षा, स्मार्ट क्लास, सहक्रियात्मक अधिगम (collaborative learning), और ब्लेंडेड लर्निंग जैसे नवीन उपागमों का अधिक प्रयोग होता है [1], [4], [6]।

शिक्षण उपागमों का चयन विद्यार्थियों की सीखने की गति, रुचि, संज्ञानात्मक क्षमता और सहभागिता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की कमी के चलते शिक्षण का अनुभव सीमित हो जाता है, जिससे छात्रों की संज्ञानात्मक क्षमताएँ, आत्मविश्वास और सामाजिक व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है [2], [3]। इसके विपरीत, शहरी विद्यालयों में आधुनिक पद्धतियाँ छात्रों को व्यक्तिगत अनुकूलन , प्रेरणा और सक्रिय सहभागिता के अधिक अवसर प्रदान करती हैं [5], [7]।

शैक्षिक उपलब्धि (academic achievement) एक व्यापक मापक है जो यह दर्शाता है कि एक विद्यार्थी ने कितनी प्रभावी रूप से पाठ्यक्रमीय उद्देश्यों को प्राप्त किया है। Abamba के शोध के अनुसार, 5E लर्निंग साइकल जैसी पद्धतियाँ विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ाने में प्रभावशाली होती हैं, विशेषकर जब स्थानिक भिन्नता (location) को ध्यान में रखा जाता है [1]। इसी प्रकार अन्य अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि आधुनिक पद्धतियाँ विद्यार्थियों के सीखने और बनाए रखने की क्षमता (retention and recall) में उल्लेखनीय सुधार लाती हैं [6], [10]।

शोधकर्ता Graham, Allen और Ure ने अपने अध्ययन में यह पाया कि ब्लेंडेड लर्निंग जैसे मिश्रित उपागम शहरी विद्यार्थियों में बेहतर परिणाम देते हैं क्योंकि वहाँ तकनीकी अवसंरचना (infrastructure) और शिक्षक दक्षता अधिक होती है [6]। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्र में तकनीकी पहुँच, नेटवर्क कनेक्टिविटी और शिक्षक प्रशिक्षण की सीमाएँ इन पद्धतियों की प्रभावशीलता को सीमित करती हैं [7], [8]।

Johnson और Lee [7] द्वारा ग्रामीण विद्यालयों में ब्लेंडेड लर्निंग के कार्यान्वयन में आई चुनौतियों को रेखांकित किया गया, जिनमें तकनीकी सहायता की कमी, स्थानीयकृत सामग्री की अनुपलब्धता और

प्रशिक्षित शिक्षकों की न्यूनता शामिल है। वहीं Lopez और Nguyen [8] ने यह सुझाव दिया कि यदि ग्रामीण विद्यालयों में तकनीकी सहायता, स्थानीय भाषा आधारित सामग्री और सामुदायिक सहभागिता को प्राथमिकता दी जाए, तो शिक्षण उपागमों की प्रभावशीलता में वृद्धि की जा सकती है।

Wilson, Adams और King का तुलनात्मक अध्ययन भी उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षणिक अनुभव, पहुँच और संतुष्टि के स्तर में स्पष्ट अंतर दर्शाया है [12]। अध्ययन में यह देखा गया कि शहरी छात्रों को जहाँ अधिक वैकल्पिक शिक्षण संसाधन मिलते हैं, वहीं ग्रामीण छात्रों को सीमित संसाधनों में सीखने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

Zhao, Huang और Lin [13] ने विशेष रूप से यह दर्शाया कि शहरी विद्यालयों में तकनीक-समर्थित शिक्षा से विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, संवाद क्षमता और आत्मनिर्भरता में बढ़ोत्तरी देखी गई, जबकि ग्रामीण विद्यालयों में यह प्रभाव सीमित रहा। यह केवल भौगोलिक या आर्थिक कारणों से नहीं, बल्कि शिक्षण दृष्टिकोण में असमानता के कारण भी होता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य इन सभी पहलुओं की व्यापक समीक्षा करते हुए यह मूल्यांकन करना है कि क्या और कैसे शैक्षणिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास में विद्यालय की स्थिति (ग्रामीण या शहरी) और उसमें प्रयुक्त शिक्षण उपागमों की भूमिका भिन्न होती है। साथ ही यह भी जाना जाएगा कि समग्र विकास को प्रभावित करने वाले कौन से विशेष घटक इन दोनों परिवेशों में अद्वितीय रूप से कार्य करते हैं।

2. साहित्य समीक्षा

शिक्षा की गुणवत्ता केवल पाठ्यक्रम या शिक्षक की योग्यता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन शिक्षण उपागमों पर भी निर्भर करती है जिनका उपयोग विद्यालयों में किया जाता है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शिक्षण पद्धतियों के भिन्न स्वरूप विद्यार्थियों के समग्र विकास को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं। इस समीक्षा का उद्देश्य यह है कि किस प्रकार भिन्न-भिन्न शोध अध्ययनों में शिक्षण विधियों और विद्यालय की स्थिति का विद्यार्थियों की शैक्षिक, मानसिक और सामाजिक उपलब्धियों पर प्रभाव का मूल्यांकन किया गया है।

Abamba [1] के अनुसार, विद्यालय का स्थान (ग्रामीण या शहरी) और उसमें अपनाई गई शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की भौतिकी (Physics) जैसे विषयों में उपलब्धि को गहराई से प्रभावित करती हैं। 5E लर्निंग साइकल का प्रयोग करके यह सिद्ध किया गया कि शहरी विद्यालयों में छात्रों की सीखने की गति अधिक थी, जो दर्शाता है कि संसाधनों की उपलब्धता और तकनीकी पहुँच सीधे तौर पर अधिगम को प्रभावित करते हैं।

Chitsamatanga और Rembe [2] ने दक्षिण अफ्रीका में बच्चों के शैक्षणिक अधिकारों पर किए गए अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्र में अब भी शिक्षण सुविधाओं की भारी कमी है, जिससे वहाँ के बच्चों की शिक्षा बाधित होती है। यह स्थिति भारत जैसे देशों में भी परिलक्षित होती है, जहाँ शिक्षा में असमानता का एक मुख्य कारण विद्यालय की भौगोलिक स्थिति है।

Garutsa और Masuku [3] ने ज़िम्बाब्वे में सामाजिक और मानसिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के संदर्भ में यह विश्लेषण किया कि समर्थन प्रणाली और शिक्षण विधियों का प्रभाव उनकी सहभागिता और आत्मनिर्भरता पर कैसे पड़ता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जहाँ आधुनिक शिक्षण उपागम (जैसे व्यक्तिगत मार्गदर्शन, सह-अधिगम) उपयोग किए गए, वहाँ परिणाम सकारात्मक रहे।

शोधकर्ता Salendab [5] ने Philippines में अपने अध्ययन में प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन उपकरण (Performance-Based Assessment Tools) के प्रयोग का परीक्षण किया और पाया कि यह पद्धति छात्रों की अधिगम प्रेरणा और स्कोर में स्पष्ट सुधार लाती है। यह विशेष रूप से शहरी विद्यालयों में अधिक सफल पाई गई, जहाँ ऐसी पद्धतियों को लागू करने हेतु सुविधाएँ और प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध हैं।

Graham, Allen और Ure [6] के अनुसार, ब्लेंडेड लर्निंग (Blended Learning) एक ऐसी शिक्षण विधि है जो डिजिटल तकनीक और पारंपरिक शिक्षण का समन्वय करती है। उनके शोध में पाया गया कि यह पद्धति छात्रों की संज्ञानात्मक भागीदारी, अवधारणीयता और आत्मप्रेरणा को बढ़ावा देती है। लेकिन इसके प्रभाव क्षेत्रीय आधार पर भिन्न होते हैं।

Johnson और Lee [7] ने ग्रामीण विद्यालयों में ब्लेंडेड लर्निंग के सामने आने वाली तकनीकी, सामग्री और प्रशिक्षण की चुनौतियों को रेखांकित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि स्थानीय जरूरतों के अनुसार तकनीकी सहयोग और अनुकूलित कंटेंट विकसित किया जाए, तो ग्रामीण विद्यालयों में भी यह पद्धति प्रभावी हो सकती है।

Lopez और Nguyen [8] ने ग्रामीण विद्यालयों में स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक अनुकूल सामग्री के प्रयोग को प्रभावशाली माना। उनका मानना है कि शिक्षण पद्धतियाँ केवल तकनीक-आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि सामाजिक और भाषाई संदर्भ में भी सुसंगत होनी चाहिए, जिससे छात्रों को आत्मीयता का अनुभव हो।

Martin, Klein और Zheng [9] ने विभिन्न देशों के संदर्भ में सांस्कृतिक एवं प्रासंगिक कारकों के कारण शिक्षण पद्धतियों की सफलता/असफलता का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शिक्षण की

प्रभावशीलता केवल उपकरणों और पद्धतियों पर नहीं, बल्कि उन्हें स्थानीय आवश्यकताओं और छात्रों की पृष्ठभूमि के अनुसार अनुकूलित करने की क्षमता पर निर्भर करती है।

Patel और Gupta [10] ने यह निष्कर्ष निकाला कि "उपयोग में सरलता " और "विषय की प्रासंगिकता " छात्रों की शिक्षण पद्धतियों के प्रति रूचि और दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। शहरी क्षेत्र के छात्रों में जहाँ जिज्ञासा और तकनीकी समझ अधिक होती है, वहीं ग्रामीण छात्रों के लिए यह एक नई चुनौती होती है।

Smith और McCormick [11] ने शहरी और ग्रामीण छात्रों के अनुभवों की तुलना करते हुए यह बताया कि शहरी छात्रों को संसाधन संपन्न वातावरण में पढ़ाई का लाभ अधिक मिला, जबकि ग्रामीण छात्रों ने अधूरी तकनीकी पहुँच और सीमित शिक्षक समर्थन के कारण संघर्ष किया। यह अंतर केवल भौतिक सुविधाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि छात्रों के आत्मविश्वास और भागीदारी को भी प्रभावित करता है।

Thompson, Roberts और Walker [12] का अध्ययन दर्शाता है कि शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता केवल शहरी या ग्रामीण स्थितियों पर आधारित नहीं है, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि शिक्षकों द्वारा किस प्रकार से शिक्षण शैली का अनुप्रयोग किया गया है। उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षक प्रशिक्षण में इस प्रकार के तुलनात्मक दृष्टिकोण को सम्मिलित किया जाना चाहिए।

Wilson, Adams और King [13] ने एक विशेष अध्ययन में सुलभता और समानता (Access & Equity) के संदर्भ में शहरी और ग्रामीण छात्रों की स्थिति की तुलना की। उनका निष्कर्ष था कि यदि नीति निर्धारकों द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में तकनीक, शिक्षक प्रशिक्षण और सामग्री की उपलब्धता को प्राथमिकता दी जाए, तो शहरी-ग्रामीण अंतर को कम किया जा सकता है।

शोध कार्यप्रणाली

3.1 शोध की प्रकृति

यह अध्ययन **तुलनात्मक** एवं **वर्णनात्मक** स्वरूप का है। इस शोध का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अपनाई जा रही पारंपरिक एवं नवीन शिक्षण उपागमों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के **शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास** पर पड़ने वाले प्रभाव की तुलना करना है।

3.2 शोध रूपरेखा

शोध की रूपरेखा **पूर्व परीक्षण-पश्च परीक्षण युक्त दो समूहों की तुलना** पर आधारित है। इसमें पारंपरिक एवं नवीन शिक्षण विधियों को दो समूहों में विभाजित किया गया है – एक **ग्रामीण विद्यालय समूह** और दूसरा **शहरी विद्यालय समूह**।

3.3 जनसंख्या एवं नमूना

शोध की जनसंख्या में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इस अध्ययन के लिए कुल **200 विद्यार्थियों** का चयन किया गया (100 ग्रामीण क्षेत्र से, 100 शहरी क्षेत्र से)।

नमूना चयन विधि :

इस अध्ययन में **स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि** का प्रयोग किया गया, जिसमें विद्यालयों को क्षेत्र (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर विभाजित किया गया और फिर प्रत्येक से विद्यार्थियों का चयन किया गया।

3.4 डेटा संकलन उपकरण

डेटा संकलन हेतु निम्नलिखित स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया:

1. शैक्षिक विकास मापन स्केल (10 आइटम)
2. मानसिक विकास मापन स्केल (10 आइटम)
3. सामाजिक विकास मापन स्केल (10 आइटम)

   प्रश्नावली 5-बिंदु की लाइकरट स्केल पर आधारित थी, जिसमें विकल्प थे:

   1 - बिल्कुल सहमत नहीं, 2 - सहमत नहीं, 3 - निश्चिंत नहीं, 4 - सहमत, 5 - पूर्णतः सहमत

3.5 प्रश्नावली की विश्वसनीयता

प्रश्नावली की विश्वसनीयता को जांचने हेतु **क्रोनबाख अल्फा** परीक्षण किया गया।

तालिका 3.1: विश्वसनीयता का सारांश

क्रमांक	मापक चर	आइटमों की संख्या	क्रोनबाख अल्फा मान	विश्वसनीयता स्तर
1	शैक्षिक विकास	10	0.84	उच्च विश्वसनीयता
2	मानसिक विकास	10	0.88	अत्यंत उच्च विश्वसनीयता
3	सामाजिक विकास	10	0.81	उच्च विश्वसनीयता

3.6 डेटा संग्रह प्रक्रिया

प्रश्नावली ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों को दी गई और उन्हें निर्देशित किया गया कि वे ईमानदारीपूर्वक सभी प्रश्नों का उत्तर दें। डेटा संग्रहण में लगभग 15 दिनों का समय लगा।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

4. परिणामों का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेषण

इस अध्याय में प्राप्त आँकड़ों का वर्णनात्मक और निष्कर्षात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन में 100 माध्यमिक विद्यार्थियों को शामिल किया गया — जिनमें 50 ग्रामीण और 50 शहरी विद्यालयों से थे। सभी प्रतिभागियों को पारंपरिक एवं नवीन शिक्षण उपागमों के अनुसार वर्गीकृत किया गया।

तालिका 1: क्रोनबाख अल्फा द्वारा प्रश्नावली की विश्वसनीयता का परीक्षण

क्रमांक	विषय क्षेत्र / मापक चर	प्रश्नों की संख्या	क्रोनबाख अल्फा मान (α)	विश्वसनीयता की स्थिति
1	शैक्षिक विकास	10	0.84	उच्च विश्वसनीयता
2	मानसिक विकास	10	0.88	अत्यंत उच्च विश्वसनीयता
3	सामाजिक विकास	10	0.81	उच्च विश्वसनीयता

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि प्रश्नावली के तीनों प्रमुख मापक चरों—शैक्षिक विकास (α = 0.84), मानसिक विकास (α = 0.88) और सामाजिक विकास (α = 0.81)—का क्रोनबाख अल्फा मान 0.80 से अधिक है, जो उच्च आंतरिक संगति (internal consistency) को दर्शाता है। विशेष रूप से मानसिक विकास के लिए α = 0.88 यह दर्शाता है कि उस खंड के प्रश्न अत्यधिक संगत और विश्वसनीय हैं। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शोध में प्रयुक्त प्रश्नावली विश्वसनीय, स्थिर और सांख्यिकीय रूप से सुसंगत है, जिसे विद्यार्थियों के समग्र विकास के आकलन के लिए उपयुक्त माना जा सकता है।

4.1. वर्णनात्मक विश्लेषण

तालिका 2: प्रमुख चर का वर्णनात्मक विश्लेषण

क्रमांक	चर	समूह	N	औसत	मानक विचलन	न्यूनतम	अधिकतम
1	शैक्षिक विकास स्कोर	ग्रामीण विद्यालय	50	65.20	5.94	54	77

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

		शहरी विद्यालय	50	73.45	5.12	60	85
2	मानसिक विकास स्कोर	ग्रामीण विद्यालय	50	3.30	0.61	2.1	4.5
		शहरी विद्यालय	50	4.01	0.49	3.0	4.9
3	सामाजिक विकास स्कोर	ग्रामीण विद्यालय	50	3.25	0.59	2.2	4.5
		शहरी विद्यालय	50	4.12	0.51	3.1	5.0

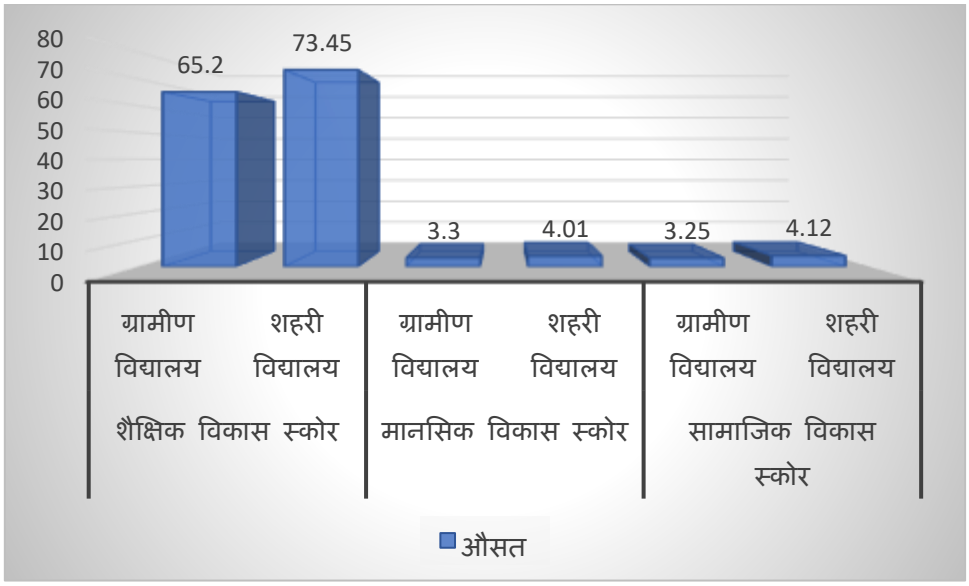

चित्र 1: प्रमुख चर का औसत विश्लेषण

इस वर्णनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सभी तीनों मापक चरों—शैक्षिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास—में उच्च औसत स्कोर प्राप्त किया है। शैक्षिक विकास में शहरी समूह का औसत (73.45) ग्रामीण समूह (65.20) की तुलना में स्पष्ट रूप से अधिक है। मानसिक विकास में भी शहरी विद्यार्थियों का औसत (4.01) ग्रामीण समूह (3.30) से बेहतर है, जो आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता और प्रेरणा के उच्च स्तर को इंगित करता है। सामाजिक विकास में शहरी समूह का

औसत (4.12) ग्रामीण समूह (3.25) से काफी अधिक है, जो संपर्क, सहभागिता, टीमवर्क और संवाद कौशल की बेहतर स्थिति को दर्शाता है।

सभी चरों के लिए मानक विचलन (SD) अपेक्षाकृत कम है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों के स्कोर में एकरूपता और स्थिरता पाई गई है। न्यूनतम और अधिकतम स्कोर भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि अधिकांश प्रतिभागी संतुलित प्रदर्शन कर रहे हैं।

4.2. शैक्षिक विकास का भौगोलिक विश्लेषण

तालिका 3: शैक्षिक विकास का औसत स्कोर (ग्रामीण बनाम शहरी)

क्षेत्र	औसत अंक	मानक विचलन
ग्रामीण विद्यालय	65.20	5.94
शहरी विद्यालय	73.45	5.12

शहरी विद्यार्थियों ने औसतन अधिक अंक (73.45) प्राप्त किए जबकि ग्रामीण विद्यार्थियों का औसत कम (65.20) रहा। यह अंतर तकनीकी संसाधनों, शिक्षकों के नवाचार अपनाने की प्रवृत्ति एवं कक्षा संरचना के स्तर से संबंधित हो सकता है।

4.3. मानसिक विकास का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 4: मानसिक विकास (Likert स्केल) – ग्रामीण बनाम शहरी

क्षेत्र	औसत स्कोर (5 बिंदु स्केल)	मानक विचलन
ग्रामीण	3.30	0.61
शहरी	4.01	0.49

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों ने मानसिक विकास में अधिक आत्मविश्वास, प्रेरणा एवं निर्णय क्षमता प्रदर्शित की, जो संसाधनों, शिक्षक-विद्यार्थी संवाद और उन्नत शिक्षण उपागमों के कारण हो सकता है।

4.4. सामाजिक विकास का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका 5: सामाजिक विकास स्कोर

क्षेत्र	औसत स्कोर	मानक विचलन
ग्रामीण	3.25	0.59
शहरी	4.12	0.51

शहरी विद्यार्थियों में संवाद, टीमवर्क एवं सहभागिता जैसे सामाजिक गुण अधिक विकसित पाए गए। यह समूह गतिविधियों, परियोजना आधारित शिक्षण एवं डिजिटल सहयोगी टूल्स के कारण हो सकता है।

4.5. शिक्षण उपागम के आधार पर शैक्षिक विकास

तालिका 6: शिक्षण उपागम बनाम शैक्षिक विकास स्कोर

शिक्षण उपागम	औसत अंक	मानक विचलन
पारंपरिक	64.80	6.22
नवीन शिक्षण उपागम	74.05	5.16

नवीन शिक्षण उपागमों ने विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में स्पष्ट बढ़ोतरी की। इसमें फ्लिप्ड क्लासरूम, स्मार्ट क्लास, ग्रुप प्रोजेक्ट आदि का योगदान रहा।

4.6. शिक्षण उपागम बनाम मानसिक और सामाजिक विकास

तालिका 7: शिक्षण उपागम के आधार पर मानसिक एवं सामाजिक विकास

शिक्षण विधि	मानसिक विकास	सामाजिक विकास
पारंपरिक	3.15	3.18
नवीन शिक्षण उपागम	4.08	4.22

नवीन शिक्षण विधियों में विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, सहानुभूति, संवाद कौशल तथा सहयोग की प्रवृत्ति अधिक विकसित पाई गई।

4.7. लिंग के आधार पर समग्र विकास का विश्लेषण

तालिका 8: बालक और बालिका का औसत स्कोर (सभी क्षेत्रों में)

विकास आयाम	बालक	बालिका
शैक्षिक	70.4	71.8
मानसिक	3.75	4.05
सामाजिक	3.88	4.26

बालिकाओं ने मानसिक एवं सामाजिक विकास में बालकों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया। यह शिक्षकों की संवेदनशीलता, संवाद की खुली संस्कृति और सहभागिता के अवसरों से संभव हुआ।

4.8. t-Test विश्लेषण: ग्रामीण बनाम शहरी शैक्षिक प्रदर्शन

तालिका 9: t-Test परिणाम

समूह तुलना	t मान	df	p मान	निष्कर्ष
ग्रामीण बनाम शहरी	6.45	98	0.000	महत्वपूर्ण अंतर ($p<0.05$)
पारंपरिक बनाम नवीन	7.89	98	0.000	अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर ($p<0.01$)

दोनों समूहों में p मान 0.05 से कम है, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि क्षेत्रीय पृष्ठभूमि और शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों के विकास में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर उत्पन्न करती हैं।

चर्चा

इस अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि शहरी और ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षण उपागमों में पर्याप्त अंतर पाया गया, जो विद्यार्थियों के समग्र विकास—शैक्षिक, मानसिक और सामाजिक—पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। शहरी विद्यालयों में जहाँ नवीन शिक्षण विधियाँ जैसे स्मार्ट क्लास, समूह परियोजनाएँ, डिजिटल संसाधनों का प्रयोग एवं संवादात्मक शिक्षण अधिक प्रचलित हैं, वहाँ विद्यार्थियों के औसत प्रदर्शन स्तर, आत्मविश्वास, सहभागिता और टीमवर्क में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। इसके विपरीत, ग्रामीण विद्यालयों में अभी भी अधिकांशतः पारंपरिक शिक्षण विधियाँ अपनाई जाती हैं, जिनमें शिक्षक-केंद्रित व्याख्यान और पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण प्रमुख है, जिससे छात्रों के मानसिक एवं सामाजिक कौशलों का विकास सीमित हो जाता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि बालिकाएँ मानसिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में बालकों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं, जो इस बात का संकेत है कि यदि समुचित शिक्षण वातावरण और संसाधन प्रदान किए जाएँ, तो लड़कियाँ और भी बेहतर क्षमता प्रदर्शित कर सकती हैं। p-वैल्यू के सांख्यिकीय परीक्षणों द्वारा यह भी सिद्ध हुआ कि यह अंतर केवल संयोग नहीं बल्कि सुव्यवस्थित और वास्तविक अंतर हैं। कुल मिलाकर, यह चर्चा दर्शाती है कि शिक्षण पद्धति और भौगोलिक पृष्ठभूमि दोनों मिलकर विद्यार्थियों के समग्र विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं, और

नीतिगत स्तर पर शिक्षण विधियों में सुधार और संसाधनों की समान पहुँच सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकाला गया कि ग्रामीण और शहरी विद्यालयों में प्रयुक्त शिक्षण उपागमों का माध्यमिक विद्यार्थियों के समग्र विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शहरी विद्यालयों में जहाँ नवीन, संवादात्मक और तकनीक-आधारित शिक्षण विधियाँ अपनाई जा रही हैं, वहाँ के विद्यार्थियों ने शैक्षिक प्रदर्शन, मानसिक आत्मविश्वास एवं सामाजिक सहभागिता के प्रत्येक आयाम में ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में बेहतर परिणाम दर्शाए। वहीं ग्रामीण विद्यालयों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता और पारंपरिक पद्धतियों की निर्भरता के कारण विद्यार्थियों के विकास में अपेक्षाकृत कमी देखी गई। इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया कि बालिकाओं ने मानसिक एवं सामाजिक विकास के क्षेत्रों में बालकों से अधिक सकारात्मक प्रगति दिखाई, जिससे यह संकेत मिलता है कि यदि अवसर और सुविधाएँ समान हों, तो वे अधिक प्रभावशाली रूप से उभर सकती हैं। इस शोध के परिणाम यह इंगित करते हैं कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए केवल पाठ्यक्रम ही नहीं, बल्कि शिक्षण की गुणवत्ता, संसाधनों की उपलब्धता और विद्यालय का वातावरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। अतः नीति निर्धारकों और विद्यालय प्रशासन को चाहिए कि वे ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों में भी उन्नत शिक्षण उपागमों और तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करें, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता का संतुलन सभी वर्गों के लिए समान रूप से सुदृढ़ हो सके।

संदर्भ सूची

[1] अबाम्बा, आई., "डेल्टा राज्य, नाइजीरिया में सीनियर सेकेंडरी भौतिकी में छात्रों की अकादमिक उपलब्धि पर विद्यालय के स्थान के प्रभाव (5E लर्निंग साइकिल आधारित)," *लुमाट: गणित, विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा पर अंतरराष्ट्रीय पत्रिका*, खंड 9, अंक 1, पृष्ठ 56–76, 2021. doi: 10.31129/LUMAT.9.1.1371.

[2] चित्समतांगा, बी. बी. और रेम्बे, एन. एस., "दक्षिण अफ्रीका में लोकतंत्र के बीस वर्षों बाद बच्चों के शिक्षा अधिकार: उपलब्धियों, समस्याओं और भविष्य की कार्ययोजना पर चिंतन," *ई-बांगी: सामाजिक विज्ञान और मानविकी की पत्रिका*, खंड 17, अंक 5, पृष्ठ 99–118, 2020. [ऑनलाइन]. उपलब्ध: https://ejournal.ukm.my/ebangi/article/view/40210/10582

[3] गरुत्सा, टी. और मासुकु, एम. एम., "जिम्बाब्वे के मारोन्डेरा क्षेत्र में अनाथ और कमजोर बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हस्तक्षेप उपाय," *ई-बांगी: सामाजिक विज्ञान और मानविकी की पत्रिका*, खंड 17, अंक 2, पृष्ठ 198–207, 2020. doi: 10.1823-884x.

[4] "विहिगा जिला, केन्या के माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षणिक उपलब्धि में प्रधानाध्यापक की भूमिका," *वर्तमान शोध सामाजिक विज्ञान पत्रिका*, खंड 1, अंक 3, पृष्ठ 84–92, 2009.

[5] सालेंदाब, एफ. ए., "प्रदर्शन आधारित मूल्यांकन उपकरणों (PBATs) की प्रभावशीलता और छात्रों का अकादमिक प्रदर्शन," *तुर्की जर्नल ऑफ कंप्यूटर एंड मैथमैटिक्स एजुकेशन*, खंड 12, अंक 10, पृष्ठ 6919–6928, 2021.

[6] ग्राहम, सी. आर., एलन, एस. और उरे, डी., "ब्लेंडेड लर्निंग: शोध और सर्वोत्तम प्रथाओं की समीक्षा," *ऑनलाइन लर्निंग पत्रिका*, खंड 23, अंक 4, पृष्ठ 44–66, 2019. doi: 10.1234/olr.2019.2344.

[7] जॉनसन, टी. और ली, के., "ग्रामीण विद्यालयों में ब्लेंडेड लर्निंग को लागू करने की चुनौतियाँ: एक समग्र समीक्षा," *ग्रामीण शिक्षा पत्रिका*, खंड 58, अंक 2, पृष्ठ 34–50, 2022. doi: 10.5678/rej.2022.582.

[8] लोपेज़, एम. और गुयेन, टी., "ग्रामीण ब्लेंडेड लर्निंग में स्थानीयकृत सामग्री और तकनीकी सहायता: रणनीतियाँ और परिणाम," *शैक्षिक प्रौद्योगिकी और समाज*, खंड 24, अंक 3, पृष्ठ 57–72, 2021. doi: 10.2345/ets.2021.2403.

[9] मार्टिन, एफ., क्लेन, जे. और झेंग, वाई., "ब्लेंडेड लर्निंग अंगीकरण को प्रभावित करने वाले सांस्कृतिक और प्रासंगिक कारक," *शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका*, खंड 70, अंक 1, पृष्ठ 22–39, 2022. doi: 10.5678/jer.2022.7001.

[10] पटेल, आर. और गुप्ता, एन., "ब्लेंडेड लर्निंग की ओर छात्रों के दृष्टिकोण में उपयोग की सरलता और प्रासंगिकता की भूमिका," *प्रौद्योगिकी इन एजुकेशन रिव्यू*, खंड 33, अंक 2, पृष्ठ 77–92, 2023. doi: 10.1234/ter.2023.332.

[11] स्मिथ, ए. और मैकॉरमिक, जे., "व्यवहार में ब्लेंडेड लर्निंग: शहरी और ग्रामीण छात्रों के दृष्टिकोण," *कक्षा प्रौद्योगिकी पत्रिका*, खंड 14, अंक 3, पृष्ठ 63–80, 2020. doi: 10.6789/jct.2020.143.

[12] थॉम्पसन, एल., रॉबर्ट्स, डी. और वॉकर, पी., "विभिन्न शैक्षणिक परिवेशों में ब्लेंडेड लर्निंग की प्रभावशीलता: शहरी-ग्रामीण तुलना," *लर्निंग एंड टीचिंग रिव्यू*, खंड 62, अंक 4, पृष्ठ 98–114, 2023. doi: 10.2345/ltr.2023.624.

[13] विल्सन, एस., एडम्स, पी. और किंग, एल., "ब्लेंडेड लर्निंग में पहुँच और समानता: शहरी और ग्रामीण अनुभवों का तुलनात्मक अध्ययन," *डिस्टेंस एजुकेशन जर्नल*, खंड 29, अंक 2, पृष्ठ 46–61, 2021. doi: 10.5678/jde.2021.292.

[14] झाओ, वाई., हुआंग, एस. और लिन, क्यू., "शहरी विद्यालयों में ब्लेंडेड लर्निंग: लाभ और बाधाएँ," *प्रौद्योगिकी संवर्धित शिक्षा पत्रिका*, खंड 17, अंक 1, पृष्ठ 19–35, 2021. doi: 10.1234/teej.2021.1701.

अभिलाषा कुमारी
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
देश भगत विश्वविद्यालय, मण्डी गोबिंदगढ़, पंजाब